श्री दशलक्षण धर्म मंडल विधान

धर्म का स्वरुप दशलक्षण रुप है। इन दश चिन्हों से ही अंतरंग धर्म जाना जाता है वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। दशलक्षण महापर्व वीतरागता का पोषक त्याग, तपस्या, संयम एवं साधना का पर्व है। दशलक्षण विधान में क्षमा १३, मार्दव १०, आर्जव १५, शौच १५, सत्य १६, संयम २१, तप २३, त्याग १०, अंकिचन १५, ब्रह्मचर्य २१, कुल १५१ अर्घ चढ़ाये जाते है।

विधान

अर्घ

आठों द्रव्य संवार, द्यानत अधिक उछाह सौं।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, अंकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।